International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 336-342 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

प्राथमिक कक्षाओं में हिंदी भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाने में डिजिटल एवं AI आधारित संसाधनों की भूमिका: एक अध्ययन

मानसी तिवारी

हिंदी शिक्षिका

Date of Submission: 06-10-2026 Date of Acceptance: 17-10-2026

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence–AI) का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण में इन संसाधनों का उपयोग बच्चों के सीखने को अधिक रोचक, सरल और प्रभावी बनाने में सहायक हो सकता है। राष्ट्रीयशिक्षानीति (NEP) 2020 एवंराष्ट्रीयपाठ्यचर्याकीरूपरेखा (NCF-SE) 2023 मेंशिक्षण-अधिगमप्रक्रियाकोप्रभावी, रोचकएवंगुणवत्तापूर्णबनानेकेलिएडिजिटलतकनीककेसार्थकउपयोगपरबलदियागयाहै।प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक कक्षाओं में हिंदी भाषा शिक्षण के लिए डिजिटल बोर्ड, PPT, शैक्षिक वीडियो, ऑडियो, ऑनलाइन क्विज़, डिजिटल वर्कशीट तथा चित्र आधारित गतिविधियों के प्रयोग की संभावनाओं पर विचार किया गया है। साथ ही, AI की सहायता से कहानी एवं कविता निर्माण, शब्दावली अभ्यास, व्याकरण संबंधी प्रश्न, व्यक्तिगत स्तर की वर्कशीट तथा शिक्षक के लिए पाठ-योजना और गतिविधि निर्माण जैसे कार्यों के उपयोग पर चर्चा की गई है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि डिजिटल एवं AI आधारित संसाधन विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी, सीखने में रुचि, रचनात्मकता तथा व्यक्तिगत सीखने में सहायता कर सकते हैं। हालांकि, इनके प्रयोग के साथ तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता, AI द्वारा तैयार सामग्री की शुद्धता, शिक्षक प्रशिक्षण, स्क्रीन पर अत्यधिक निर्भरता तथा बच्चों की डिजिटल गोपनीयता जैसी चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। अतः इन संसाधनों का प्रयोग शिक्षक के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि सहायक साधन के रूप में किया जाना चाहिए। शिक्षक द्वारा सामग्री की जाँच, आयु-उपयुक्त सामग्री का चयन और पारंपरिक तथा डिजिटल शिक्षण के बीच संतुलन इस प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बना सकता है। हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण और विश्वसनीय AI आधारित सामग्री का विकास भी समय की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द:हिंदी भाषा शिक्षण, प्राथमिक शिक्षा, डिजिटल संसाधन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, AI, भाषा कौशल, डिजिटल शिक्षण, बाल-केंद्रित शिक्षा

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। तकनीक ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को पहले की तुलना में अधिक सरल, रोचक और प्रभावी बनाने के नए अवसर प्रदान किए हैं। स्मार्ट कक्षा, डिजिटल बोर्ड, शैक्षिक वीडियो, ऑडियो सामग्री, ऑनलाइन क्विज़, डिजिटल वर्कशीट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 336-342 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

Intelligence–AI) जैसे संसाधन धीरे-धीरे विद्यालयी शिक्षा का हिस्सा बन रहे हैं। इन संसाधनों का उद्देश्य केवल कक्षा को आधुनिक बनाना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को सीखने के अधिक अवसर प्रदान करना है।

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का विशेष महत्व है, क्योंकि इसी स्तर पर बच्चों में भाषा की मूलभूत समझ विकसित होती है। इस अवस्था में बच्चे नए शब्द सीखते हैं, वाक्य बनाना समझते हैं, कहानियाँ पढ़ते और सुनते हैं तथा अपने विचारों को बोलकर और लिखकर व्यक्त करना सीखते हैं। हिंदी भाषा के प्रभावी शिक्षण के लिए केवल पाठ्यपुस्तक और लिखित अभ्यास पर्याप्त नहीं हैं। बच्चों को सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के निरंतर अवसर मिलना आवश्यक है।

डिजिटल संसाधन और AI इन अवसरों को बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं। इनके माध्यम से हिंदी भाषा को चित्र, ध्वनि, वीडियो, कहानी, खेल और गतिविधियों से जोड़ा जा सकता है। इससे बच्चों के लिए सीखना अधिक स्वाभाविक और आनंददायक हो सकता है। हालांकि, तकनीक का प्रयोग तभी प्रभावी होगा, जब उसका उपयोग स्पष्ट शैक्षिक उद्देश्य और शिक्षक के मार्गदर्शन के साथ किया जाए।

अध्ययन की आवश्यकता

प्राथमिक कक्षाओं में प्रत्येक बच्चा अलग गति और अलग तरीके से सीखता है। कुछ बच्चे पढ़ने में रुचि लेते हैं, कुछ सुनकर जल्दी समझते हैं, जबकि कुछ बच्चे चित्रों और गतिविधियों के माध्यम से बेहतर सीखते हैं। एक ही प्रकार की शिक्षण पद्धति सभी बच्चों की आवश्यकताओं को समान रूप से पूरा नहीं कर सकती।

ऐसी स्थिति में डिजिटल संसाधन शिक्षक को विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने में सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी कहानी को केवल पढ़ाने के स्थान पर उसका चित्र, ऑडियो या छोटा वीडियो दिखाया जा सकता है। इसके बाद बच्चों से कहानी के पात्रों, घटनाओं और संदेश पर बातचीत कराई जा सकती है। इस प्रकार एक ही पाठ के माध्यम से श्रवण, पठन, मौखिक अभिव्यक्ति और लेखन का अभ्यास कराया जा सकता है।

AI आधारित साधनों की सहायता से विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार अलग-अलग अभ्यास भी तैयार किए जा सकते हैं। इससे उन बच्चों को अतिरिक्त अभ्यास दिया जा सकता है जिन्हें किसी विषय को समझने में कठिनाई हो रही है। इसी प्रकार, जिन बच्चों की समझ अपेक्षाकृत अच्छी है, उनके लिए रचनात्मक और चुनौतीपूर्ण प्रश्न तैयार किए जा सकते हैं।

इस प्रकार डिजिटल और AI आधारित संसाधनों का अध्ययन इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ये हिंदी भाषा शिक्षण को अधिक सहभागितापूर्ण, बाल-केंद्रित और आवश्यकता-आधारित बनाने की संभावना रखते हैं।

कक्षा-अनुभव एवं व्यावहारिक अवलोकन

प्राथमिक कक्षाओं में हिंदी शिक्षण के दौरान मुझे यह अनुभव हुआ कि जब पाठ्यवस्तु को बच्चों की रुचि, खेल और गतिविधियों से जोड़ा जाता है, तो विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रियता से भाग लेते हैं। डिजिटल संसाधनों और गतिविधि-आधारित शिक्षण को साथ लेकर किए गए कुछ प्रयासों ने भाषा सीखने को अधिक रोचक और सहज बनाने में सहायता की।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 336-342 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

'विशेषण'के शिक्षण के दौरान PPT का प्रयोग किया गया। केवल परिभाषा और उदाहरण समझाने के स्थान पर PPT में छोटे-छोटे क्विज़ और'कौन बनेगा विशेषणपति'जैसे खेल शामिल किए गए। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को विशेषण पहचानने और उसका उचित प्रयोग करने का अवसर मिला। खेल के रूप में अभ्यास करने से विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और विषय को समझने में रुचि दिखाई। इससे यह अनुभव हुआ कि व्याकरण जैसे विषयों को भी खेल और डिजिटल गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के लिए आनंददायक बनाया जा सकता है।

'मेरा बचपन' पाठ के दौरान विद्यार्थियों को अपने माता-पिता के बचपन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया। उनसे पूछा गया कि उनके माता-पिता बचपन में कौन-कौन से खेल खेलते थे और उनका बचपन किस प्रकार बीतता था। बच्चों ने घर पर बातचीत करके जानकारी प्राप्त की और कक्षा में उसे साझा किया। इसके साथ ही, गिल्ली-डंडा, स्टापू जैसे पारंपरिक खेलों और पुराने समय की जीवनशैली से संबंधित दृश्य AI वीडियो के माध्यम सेदिखाए गए। इससे विद्यार्थियों को अतीत और वर्तमान के बीच अंतर समझने तथा अपने विचारों को मौखिक रूप से व्यक्त करने का अवसर मिला।

'संज्ञा' के शिक्षण में खेल-आधारित गतिविधियों के साथ डिजिटल संसाधनों का भी प्रयोग किया गया। बच्चों को 'जार और चिट'के माध्यम से संज्ञा से संबंधित शब्दों को पहचानने और उनका वर्गीकरण करने का अवसर दिया गया। इसके अतिरिक्त, PPT में व्यक्तियों, स्थानों, वस्तुओं और प्राणियों के चित्र दिखाकर विद्यार्थियों से संज्ञा शब्दों की पहचान करवाई गई। छोटे डिजिटल क्विज़ के माध्यम से उनके ज्ञान का अभ्यास भी कराया गया। इस प्रकार, बच्चों को व्याकरण के नियमों को केवल याद करने के बजाय उदाहरणों और प्रयोग के माध्यम से समझने का अवसर मिला।

'जयपुर से पत्र' पाठ को स्थानीय एवं सांस्कृतिक संदर्भ से जोड़ने के लिए विद्यार्थियों को राजस्थान की किसी प्रसिद्ध वस्तु, पोशाक, भोजन या अन्य विशेषता का चित्र बनाने के लिए कहा गया। पाठ को अधिक रोचक बनाने के लिएकैनवा (Canva)की सहायता से राजस्थान का एक चित्रात्मक कोलाज मैपतैयार किया गया, जिसमें प्रमुख पर्यटन स्थलों, पारंपरिक वेशभूषा, लोककला और प्रसिद्ध व्यंजनों के चित्र शामिल किए गए। इसके बाद विद्यार्थियों ने अपने बनाए चित्रों के बारे में एक-दो वाक्य प्रस्तुत किए। डिजिटल चित्रों और रचनात्मक गतिविधियों के संयोजन से बच्चों को सांस्कृतिक विविधता समझने तथा अपने विचारों को आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करने में सहायता मिली।

'एक जादुई पिटारा' कवितासमझाने के बाद बच्चों को एक-एक चिट दी गई, जिस पर उन्होंने लिखा कि यदि उनके पास जादुई पिटारा हो, तो वे उसमें से क्या निकलवाना चाहेंगे। सभी चिटों को एक जादुई पिटारे में डालकर एक-एक करके निकाला गया और बच्चों की कल्पनाओं को कक्षा में साझा किया गया। इसके साथ ही, AI की सहायता से जादुई पिटारे और उसमें से निकलने वाली विभिन्न वस्तुओं के चित्र तैयार करकेविद्यार्थियों को दिखाया गया। इससे बच्चों की रुचि और कल्पनाशक्ति को प्रोत्साहन मिला। विद्यार्थियों को अपनी कल्पना के अनुसार वस्तु का चित्र बनाने और उसके बारे में वाक्य बोलने के लिए भी प्रेरित किया गया।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 336-342 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

इसी प्रकार, **'रस्साकशी'** पाठको केवल पुस्तक तक सीमित न रखते हुए खेल-आधारित गतिविधि से जोड़ा गया। विद्यार्थियों के लिए रस्साकशी प्रतियोगिता आयोजित की गई और उसके बाद कविता की विषय-वस्तु पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त, डिजिटल माध्यम से रस्साकशी खेल के दृश्य दिखाए गए, जिससे विद्यार्थियों को खेल के नियमों, सामूहिक प्रयास और सहयोग की भावना को समझने में सहायता मिली। वास्तविक खेल के अनुभव और डिजिटल दृश्य सामग्री के संयोजन से बच्चों को कविता के संदर्भ को अपने जीवन से जोड़ने का अवसर मिला।

'हमारा आहार' कविता के शिक्षण के दौरान डिजिटल संसाधनों का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों के लिए स्वस्थ एवं अस्वस्थ आहार से संबंधित एक रोचक गतिविधि आयोजित की गई।गूगल फॉर्म्स (Google Forms)के माध्यम से क्विज़ आयोजित कर विद्यार्थियों से आहार एवं पोषण से संबंधित प्रश्न पूछे गए।इसके बाद, डिजिटल गतिविधि के माध्यम से बच्चों ने फल, सब्जियाँ, अनाज, दालें और जंक फूड जैसे खाद्य पदार्थों की पहचान कर उनका वर्गीकरण किया। इसके अतिरिक्त, कलात्मक गतिविधि के अंतर्गत विद्यार्थियों को संतुलित आहार की थाली तैयार करने के लिए प्रेरित किया गया।

इन कक्षा-अनुभवों से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी भाषा शिक्षण को केवल पाठ्यपुस्तक, प्रश्न-उत्तर और लिखित अभ्यास तक सीमित रखने के बजाय डिजिटल साधनों, खेल, चित्र, बातचीत, प्रस्तुति और वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ा जा सकता है। जब बच्चे किसी विषय को देखकर, सुनकर, खेलकर, बोलकर और अपने अनुभवों से जोड़कर सीखते हैं, तो सीखने की प्रक्रिया अधिक स्वाभाविक और रुचिकर बनती है।

डिजिटल एवं AI आधारित संसाधनों का प्रयोग

प्राथमिक हिंदी कक्षा में डिजिटल एवं AI आधारित संसाधनों का प्रयोग पाठ को अधिक रोचक, संवादात्मक और बाल-केंद्रित बनाने में सहायक हो सकता है। इन संसाधनों का प्रयोग केवल विषय-वस्तु प्रस्तुत करने तक सीमित न रहकर बच्चों को सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, सोचने और रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त होने के अवसर देने के लिए किया जा सकता है।

1. डिजिटल बोर्ड, PPT एवं दृश्य सामग्री
डिजिटल बोर्ड और PPT के माध्यम से पाठ की विषय-वस्तु को चित्रों, शब्दों और उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, 'संज्ञा' पढ़ाते समय व्यक्ति, स्थान, वस्तु और पशु-पक्षियों के चित्र दिखाकर बच्चों से उनके नाम पूछे जा सकते हैं। इसके बाद उन्हीं शब्दों के आधार पर संज्ञा की अवधारणा समझाई जा सकती है। चित्र बच्चों की कल्पना और रचनात्मकता को भी बढ़ाते हैं। किसी चित्र के आधार पर शब्द लिखने, वाक्य बनाने या छोटी कहानी तैयार करने जैसी गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं।

2. शैक्षिक वीडियो, ऑडियो एवं कहानी-कथन
कहानी, कविता, संवाद और भाषा गतिविधियों से जुड़े छोटे वीडियो बच्चों की रुचि बढ़ा सकते हैं। वीडियो देखने के बाद बच्चों से प्रश्न पूछे जा सकते हैं या उन्हें कहानी अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहा जा सकता है। इसी प्रकार कहानी और कविता के ऑडियो के माध्यम से श्रवण कौशल, सही उच्चारण, लय और भाव को विकसित किया जा सकता है।

3. ऑनलाइन क्विज़ एवं डिजिटल वर्कशीट
शब्दार्थ, विलोम, पर्यायवाची, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया जैसे विषयों पर ऑनलाइन क्विज़ तैयार किए

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 336-342 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

जा सकते हैं। डिजिटल वर्कशीट में रिक्त स्थान भरना, सही विकल्प चुनना, शब्दों का मिलान करना, वाक्य बनाना और चित्र देखकर शब्द लिखना जैसी गतिविधियाँ शामिल की जा सकती हैं। इनका उपयोग अभ्यास और पुनरावृत्ति दोनों के लिए किया जा सकता है।

4. AI की सहायता से कहानी, कविता एवं शब्दावली निर्माण

AI की सहायता से किसी विशेष विषय, मूल्य या शब्दावली पर आधारित छोटी कहानियाँ और कविताएँ तैयार की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, 'पेड़ों का महत्त्व' विषय पर प्राथमिक कक्षा के स्तर की कहानी तैयार की जा सकती है। इसी प्रकार पाठ में आए कठिन शब्दों के सरल अर्थ, वाक्य-प्रयोग, समानार्थी और विलोम शब्दों पर अभ्यास तैयार किया जा सकता है। शिक्षक आवश्यकतानुसार AI द्वारा तैयार सामग्री में संशोधन कर उसे बच्चों के स्तर के अनुरूप बना सकते हैं।

5. AI आधारित व्याकरण अभ्यास एवं व्यक्तिगत सामग्री

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, काल, वचन और लिंग जैसे विषयों पर अलग-अलग स्तर के प्रश्न तैयार किए जा सकते हैं। AI की सहायता से विद्यार्थियों की सीखने की आवश्यकताओं के अनुसार भी सामग्री तैयार की जा सकती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी बच्चे को वचन समझने में कठिनाई हो रही है, तो उसके लिए सरल उदाहरणों और अभ्यासों वाली वर्कशीट तैयार की जा सकती है। बेहतर प्रदर्शन करने वाले बच्चों के लिए रचनात्मक एवं चुनौतीपूर्ण प्रश्न दिए जा सकते हैं।

6. मौखिक अभ्यास एवं शिक्षक के लिए सामग्री निर्माण

डिजिटल साधनों की सहायता से बच्चे शब्दों और वाक्यों को सुनकर बोलने का अभ्यास कर सकते हैं। कविता-पाठ, कहानी-कथन और संवाद-अभिनय जैसी गतिविधियों को भी डिजिटल माध्यमों से सहयोग मिल सकता है। साथ ही, AI शिक्षक के लिए पाठ-योजना, अभ्यास-पत्र, प्रश्न, गतिविधियाँ और पुनरावृत्ति सामग्री तैयार करने में सहायक हो सकता है। इससे शिक्षक को सामग्री तैयार करने में लगने वाला समय कम हो सकता है और वह विद्यार्थियों की व्यक्तिगत सहायता तथा रचनात्मक गतिविधियों पर अधिक ध्यान दे सकता है।

डिजिटल एवं AI संसाधनों के प्रमुख लाभ

डिजिटल और AI आधारित संसाधनों के संतुलित प्रयोग से हिंदी भाषा शिक्षण में कई सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

सबसे पहला लाभ विद्यार्थियों कीसक्रिय भागीदारीहै। जब बच्चे केवल सुनने के बजाय चित्र देखते हैं, प्रश्नों का उत्तर देते हैं, क्विज़ में भाग लेते हैं और डिजिटल गतिविधियाँ करते हैं, तो वे सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय होते हैं।

दूसरा लाभसीखने में रुचिका विकास है। कहानी, चित्र, ध्वनि और गतिविधियों के माध्यम से हिंदी सीखना बच्चों के लिए अधिक रोचक बनाया जा सकता है।

तीसरा लाभरचनात्मकता का विकासहै। चित्र देखकर कहानी बनाना, किसी कहानी का नया अंत लिखना, कविता बनाना या संवादतैयार करना बच्चों को अपनी कल्पना का प्रयोग करने का अवसर देता है।

चौथा लाभव्यक्तिगत सीखने में सहायताहै। अलग-अलग स्तर के विद्यार्थियों के लिए अभ्यास तैयार करने से शिक्षक बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार सहायता दे सकता है।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 336-342 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

इसके अतिरिक्त, शिक्षक के लिए सामग्री तैयार करने में समय की बचत भी एक महत्त्वपूर्ण लाभ है। यदि शिक्षक AI की सहायता से प्रारंभिक सामग्री तैयार करता है और फिर उसे अपनी कक्षा की आवश्यकता के अनुसार संशोधित करता है, तो उसका समय अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है।

चुनौतियाँ

तकनीक के लाभों के साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं। सभी विद्यालयों में समान डिजिटल सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। इंटरनेट, उपकरण, बिजली और तकनीकी सहायता की कमी डिजिटल शिक्षण के मार्ग में बाधा बन सकती है।

AI से प्राप्त सामग्री कीशुद्धताभी एक महत्वपूर्ण विषय है। AI द्वारा तैयार सामग्री में कभी-कभी तथ्यात्मक, भाषायी या व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ हो सकती हैं। इसलिए शिक्षक को AI द्वारा तैयार सामग्री को बिना जाँच के विद्यार्थियों को नहीं देना चाहिए।

दूसरी चुनौतीशिक्षक प्रशिक्षणकी है। केवल उपकरण उपलब्ध होना पर्याप्त नहीं है। शिक्षकों को यह समझना आवश्यक है कि किस उद्देश्य के लिए कौन-सा डिजिटल साधन उपयोगी है और उसे कक्षा में किस प्रकार प्रयोग किया जाए।

एक अन्य चुनौती बच्चों काअत्यधिक स्क्रीन-निर्भर होनाहै। प्राथमिक बच्चों के लिए स्क्रीन का प्रयोग सीमित और उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। डिजिटल गतिविधियों के साथ पुस्तक-पठन, लिखित कार्य, खेल, बातचीत, समूह गतिविधि और वास्तविक अनुभवों को भी समान महत्त्व दिया जाना चाहिए।

इसके अलावा, बच्चों की व्यक्तिगत जानकारी और डिजिटल गोपनीयता की सुरक्षा पर भी ध्यान देना आवश्यक है। किसी भी AI या ऑनलाइन साधन का प्रयोग करते समय बच्चों की निजी जानकारी को अनावश्यक रूप से साझा नहीं किया जाना चाहिए।

शिक्षक की भूमिका

तकनीक के बढ़ते प्रयोग के बावजूद शिक्षक की भूमिका कम नहीं होती, बल्कि और महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक यह तय करता है कि किसी विशेष कक्षा के विद्यार्थियों के लिए कौन-सी सामग्री उपयोगी और उपयुक्त है।

AI को शिक्षक का विकल्प नहीं, बल्किसहायक उपकरणमाना जाना चाहिए। AI सामग्री तैयार कर सकता है, लेकिन बच्चों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझना, उनकी कठिनाइयों को पहचानना, उन्हें प्रोत्साहित करना और उनके साथ मानवीय संवाद स्थापित करना शिक्षक की भूमिका है।

शिक्षक को AI से प्राप्त सामग्री की तथ्यात्मक और भाषायी जाँच करनी चाहिए। विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं में सामग्री सरल, स्पष्ट, आयु-उपयुक्त और बच्चों के अनुभवों से जुड़ी होनी चाहिए।

निष्कर्ष

प्राथमिक कक्षाओं में हिंदी भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाने में डिजिटल एवं AI आधारित संसाधन उपयोगी भूमिका निभा सकते हैं। इनके माध्यम से भाषा सीखने को केवल पुस्तक और कॉपी तक सीमित न रखकर कहानी, चित्र, ध्वनि, वीडियो, संवाद और रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ा जा सकता है। इससे बच्चों को सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के अधिक अवसर मिलते हैं तथा अलग-अलग स्तर के विद्यार्थियों के लिए अभ्यास तैयार करना भी आसान होता है।फिर भी,

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 6, Issue 5, Sep. – Oct., 2026, pp: 336-342 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

तकनीक को शिक्षण का एकमात्र माध्यम नहीं बनाया जाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर शिक्षक-विद्यार्थी संवाद, पुस्तक-पठन, लिखित अभ्यास, समूह कार्य और खेल-आधारित गतिविधियों का अपना महत्त्व है। इसलिए डिजिटल और पारंपरिक शिक्षण के बीच उचित संतुलन आवश्यक है।

डिजिटल तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षक के स्थान पर नहीं, बल्किशिक्षक के सहयोगीके रूप में अधिक सार्थक भूमिका निभा सकते हैं। यदि तकनीक को बच्चों की आवश्यकताओं और शिक्षक के अनुभव के साथ संतुलित रूप से जोड़ा जाए, तो प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी, रचनात्मक, समावेशी और आनंददायक बनाया जा सकता है।